ILLUSTRATED SCRIPTURE STORIES, II.

The Teaching of Jesus Christ.

सचित्र धार्मिक कथाएं—२

जगत गुरु यीशु मसीह जी की शिक्षा

लेखक

प्रभु सेवक यूनस सिंह, अल्मोड़ा.

PUBLISHED BY

The North India Christian Tract & Book Society,

ALLAHABAD.

1st Edition.
1,600 copies.

1921

Price 4 annas.
दाम ४ आना



यीशु मसीह की शिक्षा.

प्रभु यीशु मसीह एक बड़ा उपदेशक था, वह कभी किसी सभा के घर में कभी समुद्र के तीर कभी किसी ऊंचे पर्वत पर और कभी कुए, मैदान तथा अन्य २ स्थानों में एक दो से ले कर सहस्रों मनुष्यों लों उपदेश करता और शिक्षा देता दिखाई देता है. लोग उसके उपदेश को सुन कर अचंभा करते थे कोई कहता था कि क्योंकर यह ऐसा उपदेश कर सकता है और कोई कि वह अधिकारी की रीति से उपदेश करता है और कोई कि किसी मनुष्य ने उस के समान बात न की· वह सब में गुरू के नाम से प्रसिद्ध हो गया यहां लों कि यहूदियों के प्रधानों में से कितने उसे "हे गुरू" कह कर बातें करते थे. जब यीशु को लोगों ने गुरू कहा तो उस के चेलों को शिष्य कहना ही था. यीशु अपने आश्चर्य्यकर्मों के द्वारा भी सिखाता था परन्तु वह बहुधा करके दृष्टान्त व उपदेश करके सिखाता था. इस छोटी पुस्तिका में हम यीशु की शिक्षा का कुछ वर्णन करेंगे.

१. पर्वत पर का उपदेश.

यीशु मसीह के आश्चर्य्यकर्मों और उस के उपदेशों की कीर्त्ति सारे देश में फैल गई और दूर २ से लोग उस का उपदेश सुनने और अपने २ रोगों से चंगा किये जाने के लिये उस के पास आने लगे और एक बड़ी भीड़ उस के पीछे हो ली·

एक समय का बर्णन है कि जब यीशु ने भीड़ को देखा तो वह पर्वत पर चढ़ गया और लोग पर्वत की ढलवान पर उस का उपदेश सुनने के लिये बैठ गये और वह अपना मुंह खोलके उन्हें उपदेश देने लगा. यह वही उपदेश है जो पर्वत पर दिये जाने से पर्वत पर के उपदेश के नाम से मशहूर है यह उपदेश एक प्रकार से यीशु मसीह की शिक्षाओं का सारांश कहा जा सकता है जिस में वह स्वर्ग के राज्य का बर्णन करके साफ २ बता देता है कि कौन उस में प्रवेश करेंगे उन का स्वभाव कैसा होगा उन में क्या २ गुण होंगे और फिर कि और मनुष्यों के संग उन का कैसा बर्त्ताव होगा. इत्यादि. अब हम संक्षेप में इस उपदेश का बर्णन करेंगे.

इस उपदेश में यीशु मसीह पहिले यह बतलाता है कि धन्य या भाग्यवान कौन हैं. परन्तु यह नये प्रकार की भाग्यमानी है. यहूदी एक ऐसे मसीह की बाट जोह रहे थे जो उन की गर्दन के जुए को दूर कर देगा. वह ऐसा राजा होगा जो राजाओं के समान सुन्दर बस्त्र से विभूषित होकर बड़ी बिजय प्राप्त कर हमारे शत्रुओं से बदला लेगा. प्रभु यीशु उन के साम्हने दूसरा ही राजा, दूसरी भाग्यमानी रखता है जिस में दीनता का धन और नम्रता की बड़ाई पाई जाती है और जिस की भाग्यमानी शोक करने और दुःख सहने पर है. एक ऐसा राज्य जिस के निवासी अपस्वार्थी नहीं परन्तु परस्वार्थी हो कर अपना सब कुछ दूसरे के लिये दे देते हैं.

इस के पीछे प्रभु व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की बातों का बर्णन करके बतलाता है कि वह नियम सदा लों रहनेहारा

न था परन्तु अब वह मिटाया तो नहीं जाता है बल्कि एक नया रूप धारण करता है अर्थात् पुराना कठिन नियम दया के नये नियम में बदल जाता है यूं व्यवस्था टूटती नहीं परन्तु पूरी हो जाती है. तब उदाहरण के लिये वह कुछ आज्ञाओं का नया अर्थ बतलाता है अर्थात यह कि कहा गया था कि "नरहिंसा न कर" सो वह कहता है मैं कहता हूं कि क्रोध भी न कर. फिर "परस्त्रीगमन न करने" की आज्ञा के साथ वह कहता है कि कुइच्छा से दृष्टि करना भी वैसा ही अपराध है इसी प्रकार वह झूठ और बदला लेने के विषय में सिखा कर कहता है कि प्रेम सब पर प्रधान है. और यह सिखाता है कि आगे को ईश्वर के राज्य सन्तानों को ऐसा ही सिद्ध होना है जैसे स्वर्गवासी पिता सिद्ध है.

तब वह ईश्वर के राज्य के सन्तानों की ओर फिर कर कहता है कि वे दान तो करेंगे परन्तु अपने आगे शोर न मचायेंगे. प्रार्थना करेंगे सो भी गुप्त में जिस से वे परमेश्वर का दर्शन प्राप्त कर लें. उपवास भी वे रखेंगे परन्तु उस समय उन का रूप उदासी न होगा. और वे किसी बात की चिन्ता न करके परमेश्वर अपने ईश्वर में मग्न रहेंगे.

भूलना न चाहिये कि परमेश्वर ने हम में से प्रत्येक प्राणी को किसी दूसरे की सहायता व उपकार के लिये बनाया है सो वह मनुष्य जो स्वर्ग के राज्य का अधिकारी हो गया है वह दूसरों पर दोष लगाने व उनके अपराध खोजने की चिन्ता छोड़ कर अपनी ही जांच करता रहेगा और अपने

तईं दूसरों की सेवा में अर्पण कर देगा. क्योंकि वह यह भली भांति जान लेता है कि यदि वह अधर्म के चौड़े मार्ग पर चले तो वह नाश हो जायेगा और यदि धर्म के मार्ग पर चले तो उसे तंग मार्ग पर तो चलना होगा परन्तु अन्त भला होगा·

इस प्रकार की शिक्षा देकर प्रभु यीशु ने अन्त में एक दृष्टान्त व उपमा देकर प्रगट कर दिया कि उस की शिक्षा पालन करनेहारे व न करनेहारे में क्या भेद है. उस ने कहा कि जो कोई मेरी यह बातें सुन कर उन्हें पालन करे मैं उस की उपमा एक बुद्धिमान मनुष्य से देऊंगा जिस ने अपना घर पत्थर पर बनाया और मेंह बरसा और बाढ़ आई और आंधी चली और उस घर पर लगी पर वह नहीं गिरा क्योंकि उस की नेव पत्थर पर डाली गई थी· फिर उस ने कहा कि जो कोई मेरी यह बातें सुनके उन्हें पालन न करे उस की उपमा एक निर्बुद्धि मनुष्य से दी जायेगी जिस ने अपना घर बालू पर बनाया. जब मेंह बरसा बाढ़ आई, आंधी चली और उस घर पर लगी तो वह गिर पड़ा और उस का बड़ा पतन हुआ.

प्रिय पाठक तुम्हें भी उचित है कि तुम इस कथा को पढ़ कर न केवल अचंभित होओ बल्कि देखो कि तुम्हारा घर किस पर बना है और कि तुम किस मार्ग के यात्री हो· क्या तुम स्वर्ग के राज्य के सन्तान कहे जा सकते हो. प्रभु यीशु मसीह जिस ने स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने का मार्ग बताया



वह आप ही हमें प्रवेश करानेहारा भी है. उस की शिक्षा को ग्रहण कर उस का हाथ पकड़ो तो स्वर्ग राज्य तुम्हारा है.

—:o:—

२. बीज बोनेहारे का दृष्टान्त.

पाठक पढ़ चुके हैं कि प्रभु यीशु मसीह संसार में एक बड़े गुरू और उपदेशक हो कर आये थे और कि वे अपना अधिक समय शिक्षा देने में ही लगाते थे-एक दिन का वर्णन है कि जब एक बड़ी भीड़ स्वामीजी के पीछे हो ला तब उन्होंने उचित जाना कि किसी खुले स्थान पर जा कर उपदेश करना चाहिये सो वह घर से निकल कर समुद्र के तीर पर आ खड़े हुए परन्तु भीड़ इतनी थी कि उन्हें वहां पर खड़ा होने का कोई ऐसा स्थान न मिला कि सब लोग उनका बचन सुन सकें. पास ही किसी मित्र की नाव लगी थी सो वह आप उस नाव पर चढ़ गये और सब लोग तीर पर खड़े रहे.

यद्यपि स्वामीजी ऐसे उपदेशक न थे जैसे उस समय हुआ करते थे तथापि उन्हों ने उस समय की रीति के अनुसार दृष्टान्तों के द्वारा उपदेश देना उचित जाना जिन्हें सर्व साधारण मनुष्य भी समझ लें और उन पर सोच बिचार कर सकें धर्म पुस्तक के सुसमाचार भाग में उन के कई दृष्टान्त पाये जाते हैं जो होने को तो छोटी २ कथाएं हैं और

वह भी ऐसी २ बातों के विषय में हैं जो हम रोज़ देखते सुनते हैं परन्तु यदि हम तनिक उन पर ध्यान दें तो वह ज्ञान पायेंगे जो स्वर्गीय ज्ञान कहा जा सकता है. इन छोटी २ कथाओं में जो प्रभुजी ने उस दिन समुद्र के तीर पर कहीं बीज बोनेहारे की कथा भी है जिसे मैं तुम्हें सुनाता हूं.

किसी समय की बात है कि एक किसान अपने खेत में बीज बोने को निकला (तुम ने भी किसी को बीज बोते देखा होगा) सो जब वह बीज बो रहा था तो कुछ बीज मार्ग की ओर जा गिरा कुछ पत्थरैली भूमि पर, फिर कुछ दाने ऐसे स्थान पर भी जा गिरे जहां कांटे ही कांटे थे और कुछ अच्छी भूमि पर गिरा. कुछ दिन पीछे जब किसान फिर अपने खेत में गया तो क्या देखता है कि जो बीज मार्ग में गिरा था सो तो पंछियों ने आके चुग लिया और जो पत्थरैली भूमि पर गिरा था सो उगा तो सही परन्तु बहुत मिट्टी न होने से और तरावट न पाने से घाम लगते ही झुलस गया और जड़ न पकड़ने से सूख गया. फिर आगे बढ़ कर उस ने क्या देखा कि जो बीज कांटों में जा गिरा था वह उगा तो सही परन्तु पीछे कांटों का जोर बढ़ जाने से वह अंकुर दब गया. परन्तु जितना बीज अच्छी खुदी हुई और साफ़ की हुई भूमि पर गिरा वह समय पर खूब फल फला यहां लों कि तीस से सौगुणों लों उस में फल लगा.

जब गुरूजी और उन के चेले किसी एकान्त स्थान में थे तो चेलों ने पास आ पूछा कि महाराज आप ने जो दृष्टान्त कहा उस का क्या अर्थ है. गुरूजी ने पहिले तो दृष्टान्त द्वारा शिक्षा

देने का कारण बताया और तब दृष्टान्त का अर्थ खोल कर कहा कि बीज तो ईश्वर का बचन है. और बोनेहारा वह मनुष्य है जो दूसरों को ईश्वर के विषय में शिक्षा देता है और मनुष्य का मन भिन्न २ प्रकार की भूमि के समान है. कितने मनुष्य ऐसे हैं जो ईश्वर के बचन को ध्यान से नहीं सुनते और तुरन्त भूल जाते हैं सो तो उस बीज के समान है जो मार्ग पर गिरा. फिर कितने मनुष्य ऐसे हैं जो ईश्वर का बचन सुन कर तुरन्त आनन्द से ग्रहण करलेते हैं पर उन में दृढ़ता और स्थिरता नहीं होती और जब बचन के कारण कुछ क्लेश पड़े वे सताये जायें और उन की परीक्षा हो तो वे भटक जाते और ठोकर खाते हैं. सो ऐसे मनुष्य पत्थरैली भूमि के समान हैं. फिर कितने मनुष्य ऐसे भी हैं जो ईश्वर का बचन सुनते हैं और मानना भी चाहते हैं परन्तु संसार की माया मोह से भी मुंह मोड़ना नहीं चाहते. सो वे तुरन्त संसारी चिन्ताओं और बखेड़ों में फंस जाते हैं और एकचित्त न रहने के कारण उन का विश्वास दब जाता है और पीछे निष्फल भी हो जाता है. सो यह लोग उस बीज के समान हैं जो कांटों में गिरा. अब रहा वह बीज जो अच्छी भूमि पर गिरा था और जो खूब फल भी फला यह ऐसे लोग हैं जो न केवल ईश्वर का बचन सुननेहारे ही हैं परन्तु उस को बूझनेहारे भी हैं बल्कि बचन को पकड़ के थांभे भी रहते हैं और धीरज के साथ धर्म के उत्तम फल फलते हैं अर्थात वे बिश्वास के द्वारा आत्मा से परिपूर्ण होकर पवित्रताई, मिलनसारी, मृदुभाव और दया में बढ़ते जाते हैं और बहुतों को कुमार्ग से निकाल कर धर्म मार्ग में चला देते हैं और

आप उस दौड़ में उस समय लों दौड़ते रहते हैं जब लों वे स्वर्गीय पिता के पास न पहुंच जायें

प्रिय पाठक तुम्हारा मन किस प्रकार की भूमि के समान है? प्रभु यीशु से प्रार्थना करो कि वह अपनी पवित्रात्मा के द्वारा तुम्हारा मन अच्छी भूमि के समान बना दे.

—:o:—

३. खोया हुआ रुपया अथवा सूकी का दृष्टान्त.

यहूदिया देश में जात पात तो नहीं मानी जाती थी तथापि कितने पढ़े लिखे और धनवान मनुष्य ऐसे भी थे जो कर उगाहने-हारों और दूसरे कंगाल मनुष्यों को नीच जानते थे. परन्तु इन नीच मनुष्यों में से कितने ऐसे थे जो तन मन से ईश्वर की भक्ति करते थे.

जब उन्हों ने सुना कि नासरत नगर का नबी यीशु मसीह अपने बिषय में यह कहता है कि परमेश्वर का आत्मा मुझ पर है इस लिए वह अभिषेक किया गया है कि कंगालों को सुसमाचार सुनावे कि जिन के मन चूर हैं उन्हें चंगा करे तो वे आनन्द से भर कर उस का बचन सुनने के लिये दूर २ से आने लगे और कितने उन में से उस के सच्चे भक्त भी बन गये.

सो जब यहूदी पण्डितों ने देखा कि यह नीच लोग अर्थात कर उगाहनेहारे और पापी लोग यीशु मसीह के पीछे हो लिये हैं और कि वह यहूदी होकर उन्हें ग्रहण करता और उन के संग



खाता पीता भी है तो बड़े नाराज हुए और कुड़कुड़ाने लगे. और लोगों को सिखाने लगे कि यीशु मसीह भी उन्हीं लोगों में से किसी एक के समान है.

प्रभु यीशु मसीह ने जब यह सुना तो उन्हें बड़ा शोक हुआ कि यह होने को तो अपने को पण्डित कहते हैं परन्तु यह न मनुष्य का मोल जानते हैं और न परमेश्वर के अथाह प्रेम का ही इन्हें ज्ञान है तब उन्हों ने एक स्त्री की कथा कही जिस के पास दस सूकियां अथवा रुपये व चांदी के सिक्के थे. किसी तरह उन में से एक खो गया. क्या जाने यह सिक्का उस की माला में लगा हो जो उसके व्याह के दिन उसे दिया हो, कुछ भी क्यों न हो उस का एक सिक्का खो गया और जब उसे मालूम हुआ तो बड़ी शोकित हुई और तुरन्त दीपक बार और घर बुहार के बड़े यत्न से उसे ढूंढने लगी और जब लों वह मिल न गया वह ढूंढती ही रही अन्त में वह मिल ही गया तो उसे पा कर वह आनन्द से भर अपनी सखियों व पड़ोसिनियों के पास दौड़ी गई और उन्हें एकट्ठी बुला कर बोली मेरे संग आनन्द करो कि मैं ने जो सूकी खोई थी सो पाई है.

इस कथा के द्वारा स्वामीजी ने यह बताया कि जैसे उस स्त्री को वह एक सूकी प्यारी औ बहुमूल्य थी उसी प्रकार परमेश्वर को एक पापी मनुष्य है जो धर्म मार्ग से खोया हुआ है और यदि वह उस सूकी के समान उतने ही मोल का है तौ भी नीचे पड़ा रहने से उस का मोल जाता रहा है उस के लिए एक खोजनेहारे की आवश्यक्ता है सो मनुष्य का पुत्र उसे खोजने व बचाने को

आया है क्योंकि एक पापी के लिये जो पश्चात्ताप करता और अपने खोजने व बचानेहारे पर बिश्वास करता है ईश्वर के दूतों में आनन्द होता है.

सो हे पढ़नेहारे तुम कोई क्यों न हो अपने को देखो कि तुम कहां हो कहीं पाप के कीचड़ में तो पड़े नहीं हो चेतो देखो स्वामी योशु मसीहजी हमें तुम्हें बचाने आये हैं उन के हाथ में आते ही हम उतने ही मोल के हो जायेंगे जितने मोल का परमेश्वर ने हमें बनाया था और जो हम ने खो दिया है. क्या तुम अपने बहुमूल्य प्राण को नाश करोगे ! कदापि नहीं.

---

४. उड़ाऊ पुत्र का दृष्टान्त.

जिस अभिप्राय को सिद्ध करने के लिये प्रभु योशु मसीह ने खोई हुई सूकी का दृष्टान्त कहा उसी को सिद्ध करने के लिये यह दूसरी कथा भी कही जिस्तें सब लोग भली भांति समझ लें कि परमेश्वर पापियों से प्रेम रखता है और चाहता है कि सब पापी मनुष्य अपने २ पापों से पश्चात्ताप करके अपने पिता के घर में प्रवेश करें जहां सदा का सुख और आनन्द है.

सो स्वामी योशु मसीह ने कहा कि किसी मनुष्य के दो पुत्र थे उन में से छोटे पुत्र ने अपने पिता से कहा हे पिता सम्पत्ति में से जो मेरा अंश होय सो मुझे दीजिये. तब पिता ने अपनी सम्पत्ति बांट दी और आप वह बड़े बेटे के संग रहने लगा. बहुत दिन नहीं बीते छोटे का मन घर में न लगा सो वह अपना सब कुछ एकट्ठा करके



किसी दूर देश को चला गया और वहां लुचपन में दिन बिताते हुए उस ने अपनी सारी सम्पत्ति उड़ा दी. सो जब वह सब कुछ उठा चुका तब उस देश में बड़ा अकाल पड़ा और वह कंगाल हो भीख मांगने की दशा को पहुंच गया. अब लों उस ने किसी की सेवकाई न की थी परन्तु जब खाने को कुछ न रहा तब वह मजूरी को ढूंढ में निकला. काम तो उसे कुछ भी न आता था सो उस देश के निवासियों में से एक ने दया कर उसे अपने खेतों में सुअर चराने को भेज दिया. हाय ! यह एक साहूकार के पुत्र के लिये कैसा घिनौना काम था परन्तु इस के सिवा कुछ और काम वह कर ही नहीं सकता था. सेवा तो वह करने लगा परन्तु पेट भर खाना न मिला और वह उन छीमियों से जिन्हें सुअर खाते थे अपना पेट भरने चाहता था परन्तु वह भी उसे न दिया गया.

एक दिन जब वह सुअर चरा रहा था और अपनी दशा पर सोच रहा था तो उसे चेत हुआ कि यदि इस प्रकार मजूरी ही करनी है तो पिता के पास क्यों न करूं वहां कितने मजूर हैं और उन्हें भोजन से अधिक रोटी होती है और मैं भूख से मरता हूं तब उस के मन में आया कि पिता के पास चलें और उस से कहे कि "हे पिता मैं ने स्वर्ग के बिरुद्ध और आप के साम्हने पाप किया है मैं फिर आप का पुत्र कहवाने के योग्य नहीं हूं मुझे अपने मजूरों में से एक के समान कीजिये".

सो ज्योंही उस के मन में यह बिचार उत्पन्न हुए वह त्योंही अपने पिता के घर की ओर चला. मार्ग में नाना प्रकार के सोच आये परन्तु वह अपने मार्ग पर चलता ही रहा. उस के कपड़े फटे

हुए थे देह मैला था और उस से दुर्गन्ध आती थी. अभी वह दूर ही था कि उस के पिता ने जो नित्य उस की बाट जोहता था उसे देख लिया और देखते ही दया से भर उस की ओर दौड़ा और उस के गले में लिपट के उसे प्यार किया. लड़के ने तुरन्त हाथ जोड़ अपने पिता से कहा मैं ने स्वर्ग के बिरुद्ध और आप के साम्ने पाप किया है और फिर आप का पुत्र कहवाने के योग्य नहीं हूं. अभी उस के मुंह से केवल इतने ही बचन निकले थे और उस की आंखों से आंसू की धारा बह रही थी कि पिता ने उसे आगे बोलने न दिया क्योंकि पिता अपने पुत्र की दुर्दशा को देख न सकता था और उसे अपने पुत्र के पश्चात्ताप का भी पूरा बिश्वास हो गया था सो अपने पुत्र की शंका दूर करने और अपने पूरे प्रेम और क्षमा को प्रगट करने के लिये उस ने तुरन्त अपने दासों को आज्ञा दी कि उसे सुन्दर बस्त्र आदि पहिनाओ और उत्तम भोजन तैयार करो कि हम खावें और आनन्द करें क्योंकि मेरा यह पुत्र मुआ था फिर जिया है खोया था फिर मिला है तब वे आनन्द करने लगे.

प्रिय पाठक परमेश्वर हमारा स्वर्गीय पिता है और इस छोटे पुत्र के समान हम भी पाप मार्ग में भटक गये हैं. इधर हम नाना प्रकार का दुःख भोग रहे हैं हमें तनिक भी सुख नहीं है और न मालूम कैसे २ गन्दे घिनौने कर्म करके हम सुवरों के मध्य में पड़े हुए हैं और उधर हमारा स्वर्गीय पिता प्रेम से भरी आंखों से हमारी ओर निहार रहा है. हमें चाहिए कि हम भी इस खोये हुए पुत्र के समान अपनी दशा को पहिचानें अपने पिता के प्रेम और घर के आनन्द का ख्याल करें और एक दम उठ कर उस की ओर



फिरें हम उस के साम्ने आ कर, कहें कि हे पिता हम ने पाप किया है और तेरे पुत्र कहाने योग्य नहीं हैं. परमेश्वर प्रभु यीशु मसीह के नाम पर क्षमा मांगनेहारे को तुरन्त क्षमा करता है और वह हमें अपना आत्मा देगा कि आगे को हम उस की इच्छानुसार चल कर जीवन बितावें.

---

५. दयावन्त शोमिरोनी की कथा.

तुम लोग पढ़ चुके हो कि प्रभु यीशु मसीह के उपदेश सुनने के लिये बहुत लोग इकट्ठे होते थे और ऐसे समय पर जब लोग यीशु की बड़ाई करते थे तब यहूदी पण्डितों में से कई एक उस की बड़ाई से खुश न हो कर उसे निन्दित करना चाहते थे सो एक बार ऐसा हुआ कि जब यीशु के सत्तर शिष्य आनन्द से फिर आके यीशु के नाम से जो २ काम हुए उन की चर्चा कर रहे थे तो कोई शास्त्री पास ही बैठा हुआ सुन रहा था सो जब उस ने सुना कि कितने मनुष्यों ने सुसमाचार को ग्रहण किया है तो वह प्रभु यीशु को परीक्षा करने को बोला, गुरूजी बताइये कि कौन काम करने से मैं अनन्त जीवन का अधिकारी होऊंगा ? उस के उत्तर में यीशु मसीह ने आप भी प्रश्न कर कहा तुम ही बताओ कि धर्म-शास्त्र में इस के विषय में क्या लिखा है. शास्त्री पहिले तो कुछ चक्कर में आ गया फिर कुछ सोच कर बोला कि शास्त्र में तो यह लिखा है कि "तू परमेश्वर अपने ईश्वर को अपने सारे मन से, अपने सारे प्राण से, अपनी सारी बुद्धि और अपनी सारी शक्ति से

प्रेम कर और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम कर". सो उस के उत्तर को सुन कर यीशु ने कहा कि तू ने ठीक उत्तर दिया है जा ऐसा ही कर. शास्त्रीजी ने जब देखा कि गुरूजी ने भली टाल दी तो फिर उन्हें छलने और सुननेहारों के आगे अपने तईं धर्मी ठहराने की इच्छा से फिर प्रश्न किया कि आप ही बताइये कि मेरा पड़ोसी कौन है ? इस प्रश्न के उत्तर में यीशु ने यह कथा कही, कि

एक मनुष्य यरूशलीम से यरीहो नगर को जाते हुए डाकुओं के हाथ में पड़ा जिन्हों ने उस के वस्त्र उतार लिये और उसे घायल कर अधमुआ छोड़के चले गये. संयोग से कोई पण्डित उस मार्ग से जाता था उस ने इस घायल मनुष्य को देखा परन्तु बिना कुछ किये उस के साम्ने से चला गया. इसी रीति से एक पूजारी भी उस मार्ग से आ निकला उस ने भी इस मनुष्य को देखा और वह भी साम्ने से होके चला गया. कुछ समय बीते एक और मनुष्य उस मार्ग पर आया जो एक तो जातहीन मनुष्य था, दूसरा किसी दूर स्थान का जानेहारा था. सो इस पथिक की भी उस घायल मनुष्य पर दृष्टि पड़ी और उसे देखते ही दया आ गई. सो उस ने तुरन्त उस पांस जाके उस के घावों पर तेल और दाख रस ढाल के पट्टियां बधीं और उसे अपने ही पशु पर बैठा के सराय में ले आया और उस की टहल करने लगा. दूसरे दिन उसे तो अपने मार्ग पर जाना ही था सो उसने सराय के चौकीदार को कुछ दे कहा भाई इस मनुष्य की सेवा कर और जो कुछ तेरा और लगेगा सो मैं जब फिर आऊंगा तब तुझे भर देऊंगा. इतनी कथा कह गुरूजी ने फिर पूछा तुम क्या सोचते हो इन तीन मनुष्यों में से उस मनुष्य का



जो डाकुओं के हाथ में पड़ा, पड़ोसी कौन था. शास्त्रीजी बोले महाराज वह मनुष्य जिस ने उस पर दया की. इस पर गुरूजी ने फिर कहा कि जा तू भी वैसा ही कर.

प्रिय पाठक यह कथा कह कर स्वामीजी ने न केवल यह प्रगट कर दिया कि वे एक महान उपदेशक हैं बल्कि यह कि ईश्वर की आज्ञा पालन करना उस के जानने से कहीं उत्तम है. स्वामीजी ने प्रगट कर दिया कि पूजा पाठ और जात पात का बिचार दया के आगे कुछ भी नहीं हैं और दया भी जो बिना किसी प्रकार के पक्ष के की जाय क्योंकि बहुत लोग अपने ही कुल व धर्म व देश के लोगों से तो प्रेम करना उचित जानते हैं और दूसरों की परवाह नहीं करते परन्तु स्वामीजी हमें यह सिखाते हैं कि हम इस शोमिरानी के समान सब मनुष्यों को एक दृष्टि से देखें यहां लों कि अगर कोई हमारा बैरी ही क्यों न हो उस का भी भला चाहें.

---

६. धनवान और भिखारी की कथा.

एक बार प्रभु यीशु मसीह ने शिक्षा देते हुए यह कहा कि धनवान का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना बहुत ही कठिन है इस से कितने लोगों ने यह सोचा कि धन रखना ही पाप है. सो एक और कथा कह कर दिखाया कि यह धन रखने से मनुष्य परीक्षित हो जाते हैं और कभी २ उन के नाना प्रकार के संसारिक झगड़ों में फंस जाने व अपस्वार्थी हो कर अपने ही सुख व आनन्द में पड़

कर धन उड़ाने का भय है परन्तु जब वे यह समझते हैं कि सब धन परमेश्वर की ओर से है कि यह हमारे हाथ में इसलिये सौंपा गया है कि हम उसे सावधानी से ईश्वर की इच्छानुसार व्यय करें तो वे बड़ी आशीस पा सकते हैं फिर स्वामीजी यह भी दिखाना चाहते थे कि धनी होने के कारण ही कोई मनुष्य आदरयोग्य नहीं है और न कंगाल होने से ही हम किसी मनुष्य का अनादर करें क्योंकि कितने मनुष्य धनी तो हैं परन्तु धर्मी नहीं ऐसे ही कितने मनुष्य कंगाल तो हैं परन्तु धर्मी हैं सो उदाहरण की रीति से स्वामीजी ने यह कथा कही कि :—

एक धनवान मनुष्य था जो सुन्दर वस्त्र पहिनता और प्रति दिन अपने को ही सुखी बनाने और बड़े विभव से रहने में ही अपना समय खोता था और कभी किसी दुखी कंगाल अनाथ व विधवाओं की चिन्ता न करता था यहां लों कि एक कंगाल भिखारी इलियाजर नामे जब उस की डेवढ़ी पर डाला गया तब भी उसे देख कर उस में दया न आई. यह मनुष्य यहां लों दुःखी था कि उस का सारा अंग घावों से भरा था और कुत्ते आ कर उस के घावों को चाटते थे. उस के मित्र यह जान कर कि यदि हम उसे इस धनवान मनुष्य को डेवढ़ी पर डालदें तो वह धनी उस पर दया कर पेट भर भोजन देगा. परन्तु उस की डेवढ़ी में उसे धनवान की मेज से गिरे हुए चूर चारों के सिवा और कुछ न मिला. कुछ दिन पीछे यह कंगाल मर गया और तुरन्त एक ऐसे सुख के स्थान में पहुंचा दिया गया जो परमेश्वर ने अपने भक्तों के लिये आगे से तैयार कर रक्खा है और जहां इब्राहीम जैसे सज्जन और विश्वासी

पुरुषों का बास है जिस स्थान का नाम स्वर्ग है, पीछे वह धनवान भी मर गया और उस के भाई बिरादरों ने उसे बहुमूल्य वस्त्रों में लपेट और उस के देह पर सुगन्ध तेल मल कर दफन कर दिया और बहुत सा रुपया बखेर भी दिया परन्तु जब उस ने परलोक में पहुंच कर अपनी आंक्खें खोलीं तो अपने तईं अति दुःख के स्थान में पाया जहां आग की ज्वाला से वह प्यास के मारे कलपने लगा इतने में उस ने अपने से दूर उसी कंगाल भिखारी को इब्राहीम के निकट बड़े आनन्द से बैठे पाया और पुकार कर बोला हे पिता इब्राहीम मुझ पर दया कीजिये, कृपा कर इलियाजर को भेजिये कि वह अपनी उंगली का छोर पानी में डुबो के मेरी जीभ को ठंडी करे. इब्राहीम ने उसे कहा हे पुत्र तू ने जो पाना था सो तू पा चुका है अब तेरे लिये समय नहीं है क्योंकि अब हमारे और तुम्हारे बीच बड़ा अन्तर ठहराया गया है कि जो लोग इधर से उस पार तुम्हारे पास जाया चाहें सो नहीं जा सकते और न उधर के लोग इस पार हमारे पास आ सकते हैं.

प्रिय पाठक इस कथा में तुम ने देख लिया कि वह धनी बहुत धन रखते भी परलोक की पीड़ा से नहीं बचा. उस ने संसारिक सुख को परलोक के सुख से भी उत्तम समझा जब कि यह थोड़े समय का और वह सदा का सुख था, यदि वह धन पर मन न लगाता बल्कि उसे परोपकार में लगा कर अपने ही सुख का नहीं परन्तु ईश्वर के राज्य और उस के धर्म का खोज करता तो आज उसे उस का धन स्वर्ग में संचय किया हुआ मिलता और वह उस से लाभ उठाता. सो पाठक भूलना न चाहिये कि हमें अपने जीवते जी

अपना परलोक बना लेना है, मरने के पीछे फिर समय न होगा कि हम पश्चात्ताप करें और सुखी रहें. धर्म पुस्तक में लिखा है कि परमेश्वर कहता है कि मुझे किसी पापी की मृत्यु अर्थात उस के नरक में पड़ने से खुशी नहीं इसीलिये उस ने अपने प्यारे पुत्र को इस संसार में भेजा कि हम उस पर बिश्वास ला कर नाश न होवें परन्तु अनन्त जीवन पावें. परमेश्वर हमारे कंगाल अथवा धनवान होने से ही हमें स्वर्ग व नरक में न डालेगा. वह हमारे धर्म व बिश्वास के समान हम से करेगा· सो सोचो कि क्या तुम ने अपने पापों से पश्चात्ताप कर लिया है ? क्या तुम्हारा पाप क्षमा हो गया है ? क्या तुम्हें शान्ति मिल गई है ? प्रभु यीशु में यह सब तुम्हारे लिये तैयार है. पवित्रात्मा कहता है कि आज जो तुम उस का शब्द सुनो तो अपने मन कठोर मत करो क्योंकि मरने के पीछे फिर समय नहीं.

---

७. बड़ी बयारी का दृष्टान्त.

यदि अधिकतर फरीशी यीशु से शत्रुता रखते थे फिर भी उन में से कितने ऐसे थे जो उसे एक भक्त और धर्मी मनुष्य जान कर उस से प्रेम रखते और कभी २ उसे अपने घर पर बुला कर उस का आदर संमान भी करते थे. सो जब कभी प्रभु को ऐसा समय मिलता तो वह उसे अच्छा समय जान कर शिक्षा देने के काम में भी लाता था.

एक विश्राम के दिन प्रधान फरीशियों में से किसी ने प्रभु को



नेवता दिया उस घर में पहुंच कर क्या देखा कि नेवतहरी किसी दूसरे का विचार न कर ऊंचे २ स्थान पर बैठने का यत्न कर रहे हैं सो पहिले तो स्वामीजी ने यही उचित जाना कि उन्हें ही उपदेश करें और उपदेश दे कर कहा कि मनुष्य को चाहियें कि सदा नीचा स्थान चुने तब वह ऊंचा स्थान पायेगा. इतने में वह भी आ खड़ा हुआ जिस ने सब को नेवता दिया था सो उस से कहा कि भाई यहां तो तुम्हारे ही अपने मित्र, भाई बिरादर, और धनवान पड़ोसी दिखाई दे रहे हैं भला इन को बुला कर तुम्हें क्या लाभ क्योंकि यह भी तुम्हें बुला कर बदला दे देंगे. सो जब आगे को तुम्हें फिर नेवता देना हो तो कंगालों, टुंडों, लंगड़ों और अन्धों को बुला तब तू धन्य ठहरेगा क्योंकि वे तुझे प्रतिफल नहीं दे सकते हैं परन्तु धर्मियों के जी उठने पर इस का प्रतिफल तुझ को दिया जायगा. इतने में उन में से उसी के संग बैठनेहारों में से एक ने यह बातें सुनके उस से कहा महाराज आप का बचन सत्य है धन्य वह मनुष्य जो ईश्वर के राज्य में रोटी खायेगा अर्थात जो ईश्वर से प्रतिफल पायेगा.

स्वामीजी ने देखा कि लोग इस बात को सुन कर प्रसन्न हुए हैं और चाहते भी हैं कि वे ईश्वर के राज्य में भोजन पर बैठें परन्तु वे नहीं जानते कि सचमुच कौन उस भोज पर बैठने पावेगा. वे न चेष्टा करते हैं और न उस की आज्ञा पालन करते हैं. यहूदी यह समझते थे कि हम चाहे ईश्वर के वचन को मानें वा न मानें कुछ परवाह नहीं क्योंकि वे इब्राहीम के सन्तान होने के कारण अवश्य ही वैकुंठ में प्रवेश करेंगे. सो यीशु मसीह ने एक दृष्टान्त

कह कर यह बताना उचित समझा कि वे ही ईश्वर के राज्य का सुख और आनन्द प्राप्त करेंगे जो संसार के सुख और बखेड़ों में फंसे नहीं रहते हैं और फिर यह कि ईश्वर कहां लों चाहता है कि न केवल यहूदी बल्कि सब प्रकार के लोग स्वर्ग के आनन्द को प्राप्त करें और कि वह कहां लों परिश्रम करता है कि लोग उस का बुलावा स्वीकार करें.

सो यीशु मसीह ने उस मनुष्य की ओर फिर कर कहा जिस ने कहा था कि धन्य वह जो ईश्वर के राज्य में रोटी खायगा कि किसी मनुष्य ने बड़ी बियारी बनाई और बहुतों को बुलाया. बियारी के समय में उस ने अपने दास के हाथ नेवत-हरियों को कहला भेजा कि आओ सब कुछ तैयार है. परन्तु वे सब एकमत हो के क्षमा मांगने लगे. पहिले ने उस दास से कहा मैं ने कुछ भूमि मोल ली है और उसे जाके देखना मुझे अवश्य है मैं तुझ से बिन्ता करता हूं मुझे क्षमा करवा. दूसरे ने कहा मैं ने पांच जोड़े बैल मोल लिये हैं और उन्हें परखने को जाता हूं मैं तुझ से बिन्ती करता हूं मुझे क्षमा करवा. तीसरे ने कहा मैं ने बिवाह किया है इसलिये मैं नहीं आ सकता हूं अर्थात जितने बुलाये गये थे उन में से कोई भी न आया और सब के सब संसारी बिषयों में लिप्त हो गये. सो उस दास ने लौट कर अपने स्वामी को यह बातें सुनाईं तब घर के स्वामी ने क्रोध कर अपने दास से कहा कि नगर की सड़कों और गलियों में शीघ्र जाके कंगालों औ लंगड़ों और टुंडों और अन्धों को यहां ले

आ. सो वह आज्ञा पाते ही बाहर गया और बहुतों को बुला लाया और अपने स्वामी से बोला जैसे आप ने आज्ञा दी थी तैसे किया गया है और भी जगह है तब उस घर के स्वामी ने अपने दास से कहा अच्छा फिर जाओ और राजपथों में और गाल्लों के नीचे जाके लोगों को जैसे तैसे ले ही आ कि मेरा घर भर जाए. क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि उन नेवते हुए मनुष्यों में से कोई मेरी बियारी न चखने पाएगा.

प्रिय पाठक अब तुम इस चित्र में देखते हो कि इधर उधर से बहुत से लोग आकर अन्दर प्रवेश कर रहे हैं और आनन्द भी प्राप्त कर रहे हैं परन्तु जिन्होंने नेवता ग्रहण न किया वे सब बाहर ही रह गये. देखो कि परमेश्वर ने हम सब के लिये भी एक बियारी तैयार कर रखी है यह त्राण और धर्म और अनन्त जीवन की बियारी है. अब सब कुछ तैयार है. स्वामी नासरी नाथजी ने न केवल यह बियारी तैयार ही की बल्कि सारे संसार के लोगों को नेवता भी दिया है उन के सेवक सारे संसार में जाकर उन का नेवता सुना रहे हैं और सहस्रों मनुष्य इस नेवते को ग्रहण कर इसी पृथिवी पर स्वर्गीय सुख और आनन्द भोग रहे हैं सो क्या तुम ने भी नेवता ग्रहण किया है ? या अब लों संसारी विषयों में फंस कर बहाना कर रहे हो, समय बड़े मोल का है, उसे खो देना बड़ी मूर्खता है. आओ सब कुछ तैयार है. तुम्हें केवल स्वामी यीशु मसीह को ग्रहण करना

है बस उस क्षण स्वर्गीय आनन्द तुम्हारा होगा. याद रखो कि धन्य है वह मनुष्य जो ईश्वर के राज्य में प्रवेश करेगा.

—:०:—

८. प्रभु यीशु मसीह के अधिकार के विषय में प्रधान याजकों का प्रश्न.

प्रभु यीशु मसीह के सब काम अधिकार सहित थे और लोग कहते भी थे कि यह कैसा मनुष्य है जो हवा और समुद्र पर अधिकार रखता है, जो अधिकार के साथ उपदेश देता है. जो भूतों पर अधिकार रखता है और वे उस की आज्ञा मानते हैं. प्रभु यीशु अपने गुणों से भी अधिकारी मनुष्य जान पड़ता है और पदवी से भी वह अधिकारी है. यह तो सत्य है कि संसारिक रीति पर उसे कोई पदवी नहीं मिली थी परन्तु ईश्वर की ओर से वह वह अधिकार रखता था जो सच्चाई पवित्रता और धर्म और सुशीलता पर निर्भर है फिर वह मसीह अर्थात् ख्रीष्ट भी था जो ईश्वर का ठहराया हुआ जन था कि मनुष्य का त्राण व उद्धार करे. यहूदी महायाजक और प्रधान और अध्यापक जो उस समय के बड़े और अधिकारी मनुष्य भी थे वे सदा इसी सोच में रहते थे कि हमारा अधिकार व पदवी किसी दूसरे को न मिल जाये और यदि किसी दूसरे को बढ़ते व नाम पाते देखते थे तो तुरन्त उस को हानि पहुंचाने का यत्न करने लग जाते थे.

प्रभु यीशु के समय में ऐसा हुआ कि वह जहां कहीं जाता



था सर्व साधारण लोग उस का आदर करते और उस की कीर्त्ती फैलाते थे सो यह प्रधान याजक और अध्यापक तुरन्त उस स्थान पर पहुंच गड़बड़ी डालने का उपाय निकाल देते थे और यों स्वामीजी का अधिक समय बादबिवाद में लगा देते थे . प्रभु यीशु के मारे जाने से दो तीन दिन आगे ऐसा हुआ कि वे अपने चेलों सहित मन्दिर में पहुंचे (यरूशलीम नगर में यहूदियों का एक बहुत बड़ा और सुन्दर मन्दिर था, जिस में वे प्रति दिन सांझ बिहान परमेश्वर के आगे भेंट चढ़ाते थे) सो मन्दिर में घूमते हुए उन्हों ने क्या देखा कि हर प्रकार के व्यापारी उस में व्यापार कर रहे हैं और यों उस पवित्र स्थान को अपने झूठ छल इत्यादि से अपवित्र कर रहे हैं तो उन से सहा न गया कि परमेश्वर का पवित्र मन्दिर प्रार्थना के घर के बदले डाकुओं का खोह बनाया गया है सो उन्हों ने तुरन्त इन सब बेचनेहारों को निकाल बाहर किया. जब प्रधान याजकों ने और अध्यापकों ने यह सुना तो वह बड़े क्रोध में भर गये क्योंकि इन व्यापारियों से उन्हें बड़ी आमदनी थी और वह इस खोज में लग गये कि किसी न किसी तरह उसे नाश कर दें. मन्दिर में तो वे उस पर हाथ डालने से डरते थे क्योंकि सर्व साधारण लोग उस को बड़ा उपदेशक जानते थे. सो वे उस रात नाना प्रकार के उपाय सोचते रहे.

दूसरे दिन यीशु फिर मन्दिर में आया. प्रधान याजक और अध्यापक तो उस की खोज में ही थे सो देखते ही उस के निकट आ कर बोले कि हमें बता कि तू इन कामों को किस अधिकार से करता है अर्थात अपनी योग्यता प्रगट कर और कि किस ने तुझे

यें काम करने को अधिकार दिया ? अर्थात यह कि अपनी पदवी बता. जैसा ऊपर वर्णन हुआ वे यीशु मसीह से संसारी अधिकार के विषय में प्रश्न करते थे जब कि प्रभु को आत्मिक अधिकार और पदवी मिली हुई थी. वे यह सोचते थे कि इस के पास कोई सनद नहीं है सो हम उसे दोषी ठहरा के दण्ड के योग्य ठहरा देंगे. सो जब प्रभु यीशु से यह प्रश्न हुआ तब उन्हों ने बड़े धैर्य से उस की ओर देख कर कहा कि मैं भी तुम से एक प्रश्न करता हूं जो तुम उस का उत्तर देओ तो मैं भी तुम्हारे प्रश्न का उत्तर देऊंगा कि मुझे यें काम करने का कैसा अधिकार है. सो बताओ कि योहन का बपतिस्मा देना स्वर्ग की ओर से था अथवा मनुष्यों की ओर से ? तब वे आपस में बिचार करने लगे कि जो हम कहें कि स्वर्ग की ओर से तो वह कहेगा फिर तुम ने उस का बिश्वास क्यों नहीं किया, परन्तु जो हम कहें मनुष्यों की ओर से, तब उन्हें लोगों का डर लगा क्योंकि सब लोग निश्चय योहन को भविष्यद्वक्ता जानते थे. सो उन्हों ने यीशु को उत्तर दिया कि हम नहीं जानते. इस पर यीशु ने भी उन्हें कहा कि मैं भी तुम को नहीं बताता हूं कि मुझे यें काम करने का कैसा अधिकार है .

भूलना न चाहिये कि ये प्रश्न करनेहारे सत्य के खोजी न थे, और सत्य जान कर भी उसे लेना न चाहते थे, उन का मन छली और कठोर था, योहन के जीवन में सत्य प्रगट हुआ और उन्हों ने न माना, यीशु मसीह ने अपने जीवन, बचन, आश्चर्य्यकर्मों से सत्य को प्रगट किया पर उन्हों ने यह सब जान कर भी अपनी आंखें बन्द कर लीं, सो अब उचित न था कि कोई उन से बहस

करे. यदि यीशु को अधिकार न भी होता तो उस ने क्या बुरा किया था. क्या मन्दिर को शुद्ध करना बुरा था ? हे पाठक कभी २ हमारा मन भी इन्हीं पण्डितों के समान हो जाता है, सत्य का न जानना एक बात है परन्तु जान कर न मानना बहुत ही बुरा है. याद रखना कि प्रभु यीशु अधिकारी है उसे हम पर पूरा २ अधिकार है. और वह न केवल हमें शुद्ध कर सकता है परन्तु शुद्ध करने चाहता है, क्या तुम शुद्ध हो गये ? क्या तुम शुद्ध होना चाहते हो ? तो कहो.

हे दयासागर ईश्वर जो अति महान और अति पवित्र है और सर्वशक्तिमान हो कर सब जीव जन्तुओं और मनुष्यों पर अधिकार रखता है अपनी कृपा से मुझ अधम पापी पर दया कर, मेरा मन शुद्ध कर . हे प्रभु जिस प्रकार तुम ने मन्दिर को शुद्ध कर उसे प्रार्थना के योग्य बना दिया मेरे मन को भी शुद्ध कर इस योग्य करदो कि पवित्रात्मा के द्वारा मेरा मन का मन्दिर भी प्रार्थना के योग्य स्थान बन जाये. हे प्रभु मेरे कठोर मन को दूर कर ऐसा मन दो जो चूर किया हुआ है—कि मैं महा गुरू श्री यीशु मसीहजी की शिक्षा ग्रहण कर उन का भक्त हो जाऊं ।